और इसमें 34 विदेशी रखे गए। 1880 ई० तक सरकार की ओर से 8 कोयले की खाने चलने लगी। 1874 में सरकार ने एक लोहे की खान खोली और सोने चाँदी की खानो का धंधा अपने हाथ में ले लिया।

इस प्रकार व्यावसायिक उन्नति रेलवे का निर्माण और बैंकिंग विकास के कारण जापान के आर्थिक संगठन में काफी परिवर्तन आ गया। अब उसका स्थान पाश्चयात देशो के समान हो गया। जापान की इस औद्योगीक विकास ने ही बाद में जापान में साम्राज्यवाद को जन्म दिया।

सैन्य व्यवस्था में सुधार
——————

जापान की सैनिक व्यवस्था सामंती प्रथा पर आधारित थी, इसलिए सामंती व्यवस्था का अंत होने के कारण सेना के संगठन में परिवर्तन आवश्यक हो गया। अब तक जापान का सेना निर्माण सामुराई लोगों द्वारा होता था। सामुराई लोग सामंतो की सेवा मे रहकर सैनिक सेवा प्रदान करते थे। सेना में प्रवेश इसी वर्ग तक सीमित था और जनसाधारण को सैनिक सेवा का अवसर नहीं दिया जाता था लेकिन सामंती प्रथा के अंत के साथ सामुराई लोगों के इस एकाधिकार का भी अंत हो गया और जापान के सभी वर्गों के लिए सेना में भर्ती के लिए दरवाजा खोल दिया गया। 1872 ई० में सेना संगठन में एक दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। राजाज्ञा प्रकाशीत कर जापान में सैनिक सेवा को अनिवार्य घोषीत कर दिया गया। जापान के नागरिको के लिए सैनिक शिक्षा प्राप्त करना तथा निश्चित समय तक सैनिक जीवन व्यतीत करना अनिवार्य हो गया।

इस प्रकार जापान में सैन्य व्यवस्था मे काफी सुधार हुआ।

नागरिक जीवन में सुधार
——————

शिक्षा और चिंतन के पश्चिमीकरण पत्रकारिता के विकास और विदेश आने - जाने की वृद्धि ने जापान के समाजिक रहन - सहन को तुरंत प्रभावीत किया तथा जापान की जीवन शैली और सांस्कृतिक क्षेत्र में क्रांतिकारी

परिवर्तन देखने को मिला। विदेश व्यापार से लगे जापानी विदेशी पोशाक पहनने लगे तथा विदेशियों का हैट भी लगाने लगे। 1872 ई० में सभी राजकीय पदाधिकारियों को पाश्चात्य वेश भूषा धारण करना अनिवार्य कर दिया गया। शरीर के बाहरी साज-सज्जा पर भी काफी ध्यान दिया गया। सिर मुड़वा कर और बराबरों में बालो की लटे छोड़ने और फिर उन्हे ऊपर लाकर गाठ बांधने का रिवाज जापान में प्रचलित था। यह प्रथा बंद हो गई और इसका स्थान यूरोपीय केश सज्जा ने ले लिया। दाँतो की चमक-दमक पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाने लगा।

जापान में सर्वप्रथम बिजली का प्रवेश 1887 ई० में हुआ। तब से बिजली का प्रयोग बहुत बढ़ गया। साथ ही जापान में पश्चिमी शैली के मकान बनने शुरू हुए। उनकी सजावट की शैली भी यूरोपीय हो गयी। शहरों में बड़ी मात्रा में सवारियां चलने लगी। 1880 में बॉलरूम में यूरोपीय ढंग से नाचने का रिवाज बढ़ा। आधुनिकता के आवेश में लोगो ने 1872 ई० में सम्राट को गोमांस खाने के लिए उकसाया। तब से गोमांस खाना जापान के सम्राट वर्ग का एक मुख्य लक्षण हो गया। जापान ने अपनी प्राचीन ललितकलाओं को भी त्याग दिया और उनके स्थान पर मशीनों द्वारा छपी हुई तस्वीरों का आयात किया यहाँ तक की खाने पीने के बर्तनों तक का यूरोपीकरण कर दिया गया।

अतः इस प्रकार हम देखते है कि जापान के सामाजिक जीवन मे काफी परिवर्तन हुआ ~~और~~ दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जापान के समाज का पूर्णतः यूरोपीकरण हो गया।

नए संविधान का निर्माण

राजनीतिक दलों की गतिविधियों से जापान का जीवन अशांत होते जा रहा था। सरकार के लिए लोकमत पर ध्यान रखते हुए कुछ संवैधानिक सुधार करना अत्यंत आवश्यक हो गया था। अतः Oct 1881 में एक घोषणा प्रकाशित कर यह वचन दिया गया कि 1890 तक जापान के लिए एक नया संविधान बना जाएगा और इसके अनुसार

एक राष्ट्रीय संसद का गठन किया जाएगा। इसके बाद संविधान निर्माण की तैयारी होने लगी। 3 March 1882 को इतो हीरोबमी को पश्चिमी देशों की राज्य पद्धति का अध्ययन करने के लिए यूरोप भेजा गया। इतो ने बर्लिन के प्रसिद्ध विधिवेत्ताओं से परामर्श किया, फिर वह आस्ट्रिया की राजधानी वियना गया। वहाँ उसे यह सलाह प्राप्त हुई कि ऐसा संविधान बनाया जाए जिसमें मंत्रीपरिषद् संसद की जगह सम्राट के प्रति उत्तरदायी हो और सम्राट को संसद के किसी भी फैसले को रद्द करने का अधिकार हो। वियना से इतो पेरिस, लंदन तथा रूस होते हुए जापान लौटा। 1884 में जापान लौटने पर संविधान बनाने का काम सौंप जाने पर इतो ने विदेश यात्रा के समय चुने तीन सयोग्य सहकारियों को अपनी सहायता के लिए नियुक्त किया। इतो की यह मंडली सम्राट परिवार से संबद्ध कर दी गई ताकि इसे उदारवादियों के राजनीतिक दबाव से दूर रखा जा सके। संविधान के प्रारूप तैयार होने पर प्रिवी कौंसील ने उसकी पुष्टी की, सारा कार्य समाप्त होने पर 1 Feb 1889 को नए संविधान की घोषणा की गई।

निष्कर्ष

अत: इस प्रकार कुल मे हम कह सकते है कि पुन: स्थापना के बाद जापान के जीवन के प्रत्येक पक्ष का कायापलट हुआ। खाने-पीने, जीवन यापन सोच विचार तथा राजनीतिक आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक जीवन की सारी क्रियाएं आश्चर्यजनक तेजी के साथ बदलती गई और कुछ ही समय मे जापान एक उन्नत आधुनिक देश के रूप मे संसार के सामने प्रकट हुआ।